अध्याय अडतालीसवाँ

॥श्री गणेशाय नम:॥ श्री सरस्वत्यै नम:॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नम:॥

"विषयसुखोपभोगों के बंधनों से मैं इस सांसारिक जीवन में फँसा हूँ। हे सिद्धनाथ, कब मैं आप के चरणों में लीन हो जाऊँगा? इस भव सागर में डूबने का भय मुझे हमेशा सताता रहता है, इसलिए मुझ जैसे दीन मनुष्य को शिवजी का अवतार होने वाले आप जल्द से जल्द तारिए।"

कभी भी विनाश न होने वाला ब्रह्मानंद ही सिद्ध रूप में अवतरित हुआ है। अज्ञान की रात (अँधेरा) दूर करके आप जीवात्मा को ज्ञान प्रकाश दिखाते (ज्ञान देते) हैं। सतगुरुजी के बिना यह जीवात्मा पूर्णत: असहाय होता है, अनेक शास्त्र पढ़कर भी ब्रह्म भाव (आत्मज्ञान) कैसे प्राप्त करें यह उसके समझ में नहीं आता, वह अनुभूति केवल सतगुरुजी ही उसे दे सकते हैं। सतगुरुजी के बिना मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती, जो उनकी शरण में नहीं जाता उसका जन्म व्यर्थ ही है। सतगुरुजी अगर प्रसन्न न हुए तो मृत्युलोक तथा परलोक का धन भी व्यर्थ ही है। परंतु उसी सतगुरुजी को अनन्य भाव से वंदन करने से प्रपंच की चिंता बिलकुल सताती नहीं, तथा जीवात्मा का सारा अभिमान और ममता नष्ट होकर वह मुक्ति प्राप्त करता है। जो सतगुरुजी को भूल जाते हैं, वे प्रपंच की विपत्ति में फँस जाते हैं। उसके पश्चात वे सतगुरुजी की शरण में दौडे चले जाते हैं। अस्तु। जो अमृत से भी श्रेष्ठ है, जिसे सुनने से भव बंधन टूट जाते हैं तथा ब्रह्मानंद की अनुभूति मिलती है, वह जीवनी अब सुनिए।

बागलकोट नगर में पाटील उपनाम होने वाला तथा भरपूर धन संपत्ती होने वाला एक धनवान मनुष्य रहता था; परंतु उसका ईश्वर पर बिलकुल विश्वास, भक्ति नहीं थी। दिनरात उसे केवल उसका व्यवसाय, कामकाज तथा लोगों के साथ होने वाले आदान प्रदान की ही चिंता रहती थी| उसे रुक्मिणी नाम की एक सुलक्षणी तथा सद्‌गुणी कन्या थी, परंतु उसे भूत बाधा होने के कारण घर के सभी सदस्यों को उसकी चिंता सताती रहती थी। कभी कभी भूत का प्रभाव होते ही रुक्मिणी घर के सदस्यों के सामने अनापशनाप बकती थी, माता पिता पर सही समय पर उसका विवाह न करने का आरोप लगाकर वह उन्हें बहुत सारी गालियाँ देती थी। उसकी यह स्थिति देखकर उस धनवान मनुष्य को उसकी

बहुत ही चिंता होती थी, इतने में एकबार अक्कलकोट के शरणप्पा वहाँ पधारे। शरणप्पा सिद्धारूढ़जी के बहुत ही घनिष्ठ भक्त थे, अनेक गाँवों में घूमकर वे कीर्तन करते थे तथा लोगों से सिद्धारूढ़जी की महिमा कि सिवाय अन्य कुछ भी नहीं बोलते थे। रुक्मिणी को देखकर शरणप्पा ने कहा, "इसके पश्चात आप इसकी बिलकुल चिंता न कीजिए। सिद्धारूढ़ स्वामीजी की जीवनी नियमित रूप से एक सप्ताह में पढिए, जिससे सारी पीड़ा नष्ट हो जाएगी। तथा प्रतिदिन सिद्धजी का स्मरण करके उनका चरणामृत (उनकी पाद पूजा करने के पश्चात मिलने वाला पवित्र जल) प्राशन कीजिए, इससे सारा दुख और पीड़ा दूर हो जाएगी।" उस धनवान ने कहा, "साधु महाराज, आज तक इस भूतबाधा के निवारण के लिए हमने बहुत धन खर्च किया है, उसके अलावा बहुत मंत्र तंत्र भी किए है, अनेक देवदेवताओं की मनौती उतारी, परंतु हमारे सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए। इतने सारे उपाय करने के पश्चात जब रत्ती भर भी असर नहीं हुआ, वह असर केवल एक ग्रंथ पढ़ने से कैसे हो सकता है?" उसपर शरणप्पा ने कहा, "तुम सिद्धजी की अनुपम महिमा ही नहीं जानते, यही सच है। उनकी महिमा अपार होने का हमें अनुभव हुआ है। उणकल गाँव की दो महिलाओं को इससे भी अधिक भूत बाधा हुई थी। सिद्धजी का नाम तथा उनकी महिमा सुनते ही भूतों ने दोनों को पूर्णत: छोड़ दिया। सात दिन नियमित रूप से तथा भक्तिभाव से अगर आप की कन्या सिद्धनाथजी का चिंतन करेगी तथा उनकी महिमा सुनेगी तो भूत उसे छोड़ देगा।" यह सुनकर उस धनवान ने शरणप्पा से कहा, "अगर ऐसा है तो हम रुक्मिणी से सिद्धारूढ़जी की जीवनी पढ़ने के लिए कहेंगे, परंतु चरणामृत का प्रबंध हम कैसे करेंगे? व्यवसाय के कारण सिद्धारूढ़जी से मिलने के लिए मेरे पास समय ही नहीं है, इसलिए मैं मेरे एक नौकर को हुबली भेजकर उनका चरणामृत मँगवाऊँगा।" शरणप्पा ने उसे सिद्धारूढ़जी की जीवनी दे दी तथा सिद्धजी का भजन गाकर जोर जोर से सिद्धारूढ़जी के नाम की जयजयकार की, ये सब सुनते ही रुक्मिणी सचेतन हो गयी। उसने उसके पिताजी से कहा, "बाबुजी, यह भजन मुझे बहुत मनभाया है तथा उसे सुनकर मेरा मन अत्यंत आनंदित हुआ है, मैं दिनरात यही भजन गाऊँगी।" उसपर शरणप्पा ने उसे कहा, "बेटी, यही भजन तुम प्रतिदिन गाना, जिससे सारी भूत

बाधा नष्ट हो जाएगी तथा उसके पश्चात तुम्हें कभी भी भूत बाधा नहीं होगी।" ऐसा कहकर उन्होंने उसके कान में पंचाक्षरी मंत्र का उच्चारण करके उसे दीक्षा दी तथा उसे सिद्धारूढ़जी की जीवनी पढ़ने के लिए कहा; ये सब सुनकर रुक्मिणी को बहुत चैन आया और उसने उनकी आज्ञा का पालन करने का उन्हें आश्वासन दिया। इस प्रकार का उपदेश करके शरणप्पा वहाँ से चल दिए; उसके पश्चात उस धनवान ने सिद्धारूढ़जी का चरणामृत लाने के लिए एक मनुष्य को हुबली भेज दिया। हुबली से लाया हुआ सिद्धनाथजी का चरणामृत प्राशन करते ही रुक्मिणी को अच्छा लगने लगा, उसपर उसने नियमित रूप से प्रेम पूर्वक जीवनी पढ़ना आरंभ किया। प्रतिदिन वह सिद्धजी का नामस्मरण करने लगी, जिससे कुछ ही दिनों में भूत उसे छोड़कर हमेशा के लिए चला गया तथा उसके मन पूर्ण रूप से स्वस्थता का अनुभव करने लगा। पहले वह भूत उसके शरीर में संचार करके उसे बहुत पीड़ा देता था; वही भूत सात दिन होने के पश्चात भी उसके निकट नहीं आया। वह धनवान मनुष्य अत्यंत आनंदित होकर बोला, "जीवनी का पठण बिलकुल यथाक्रम हुआ, अब भेद तथा अभेद न मानने वाले सिद्धारूढ़जी से रुक्मिणी की भेंट करानी चाहिए। पहले मैं उनपर विश्वास नहीं करता था। परंतु उन्होंने हमारा दुख तथा पीड़ा दूर करने के कारण रुक्मिणी को साथ लेकर उनके चरणों के दर्शन करने चाहिए।" जीवनी पठण करने का सप्ताह अच्छी तरह से पूरा हुआ। उसके पश्चात प्रारब्ध कर्म तथा अयोग्य समय ये दोनो जुड जाने के कारण जो हुआ, उसे सुनिए।

एक दिन दोपहर के समय रुक्मिणी एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठी थी। वह पीपल का पेड़ एक ऊँचे चबुतरे पर था, इसलिए चबुतरे से नीचे उतरते समय अचानक चक्कर आने के कारण रुक्मिणी धम से नीचे होने वाले एक पत्थर पर जा गिरी। अत्यंत जोर से पत्थर से टकरा जाने के कारण उसके सिर पर गहरी चोट पहुँचकर अधिक मात्रा में खून बहने लगा तथा उसके पिताजी आकर उसे देखने से पहले ही उसके प्राण निकल गए! दुख से पगला गए रुक्मिणी के पिताजी ने कहा, "हे सिद्धारूढ़जी, ये आप ने क्या किया? मेरी कन्या की भूत बाधा का निवारण तो किया परंतु साथ ही साथ उसके प्राण भी तो चले गए! क्या यह आप की महिमा को शोभा देता है? पहले आप पर मेरा

विश्वास नहीं था, परंतु आप ने हमारी विपत्ति दूर करने के कारण, हमारे मन में आप के प्रति विश्वास दृढ़ होने लगा था। परंतु मेरी कन्या के प्राण जाने के कारण आपकी महिमा कलंकित हुई है। लोग कहेंगे की हमने आप के नाम का स्मरण किया तथा श्रद्धा से आप की जीवनी पढी और जीवनी पढ़कर समाप्त होते ही मेरी कन्या की मृत्यु हो गयी। अब बताईए, कौन कलंकित हुआ? अब आप ये सब देखने के पश्चात भी शांत ही रहकर मेरी कन्या को मरने देंगे तो लोगों में आपकी अपकीर्ति फैलेगी कि, आप की भक्ति करने से भक्तगण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इसीलिए, हे दयालु सिद्धनाथजी जल्दी आईए और अपना बाना रखिए; आप की शरण में आई इस बालिका को काल के हवाले मत कीजिए।" इस प्रकार भावुक होकर वह धनवान गुरुदेव की प्रार्थना करते समय वहाँ एक साधु आया। उसका शांत चेहरा देखकर वह धनवान आश्चर्य से दंग रह गया। उस साधु के सिर पर लाल कपड़ा था तथा उसने गेरुआ रंग की शाल ओढ़ी थी। उसके गले में रुद्राक्ष माला थी तथा उसके बाएँ हाथ में कमंडलु था। ऐसा वह दिव्य संन्यासी उस धनवान के समीप आकर बोला, "अरे भाई! इस कन्या को क्या हुआ है? क्यों तुम दुखी दिखाई दे रहे हो?" उस धनवान के कहा, "हे यतिवर्‌य! हमारा दुख आप को कैसे बताऊँ! सिद्धारूढ़जी की भक्ति करने के कारण हमारी घर गृहस्थी दुखमय हो गयी है। एक साधु के शब्दों पर विश्वास करके मेरी कन्या ने सिद्धारूढ़जी की जीवनी का एक सप्ताह भर पठण किया और आज उसके प्राण निकल गए।" उसके ये कठोर शब्द सुनकर उस साधु ने झट से कानों पर हाथ रखे और बोला, " शिव, शिव! यह कैसा बेहूदा अपवाद सिद्धारूढ़जी पर आया! बुरा कर्म तथा बुरा समय जुड़ जाने के कारण इस कन्या की मृत्यु हो गयी और आप ने सीधा ही उसका आरोप सिद्धनाथजी पर लगाया! संपूर्ण माया से पूर्ण रूप से अलिप्त होकर अज्ञानी लोगों को तारने के लिए सिद्धनाथजी ने अवतार धारण किया है। ऐसे महात्मा को दोषी ठहराकर आप अपना ही अहित कर रहे हैं; फिर भी दयालु होकर उन्होंने मुझे यहाँ भेजा हैं। कल जब मैं उनसे मिला था तब जो कुछ उन्होंने मुझे बताया उसे सुनकर मैं भौंचक्का रह गया था। मुझे देखते ही उन्होंने कहा, "आईए यतिवर्य! कल आप एक कन्या की मृत्यु देखने वाले हैं। उसके मुख में यह भस्म डालकर आप उसे

जीवन दान दीजिए।" उनके ये शब्द सुनकर मैं दंग रह गया था। अब इस दृश्य को देखने के पश्चात उनके शब्दों की सच्चाई की मुझे प्रतीति हुई। सचमुच सिद्धारूढ़जी सर्वज्ञ है इस में कोई संदेह नहीं है। यह मृत कन्या अब उनकी कृपा से जिन्दा हो जाएगी।" ऐसा कहते हुए उस यतिवर्य ने स्वयं के बटुवे से थोड़ा सा भस्म दाहिने हाथ से निकाल लिया और उस मृत शरीर के समीप बैठकर बोला, "श्री सिद्धारूढ़ महाराज की आज्ञा से यह भस्म मैं तुम्हारे मुख में डाल रहा हूँ, अब जल्द से जल्द उठ जा।" ऐसा कहकर साधु ने उसके मुख में थोड़ा भस्म डालकर सिद्धनाम की जोरदार जयजयकार की। तब तक रूक्मिणी की करुण मृत्यु की वार्ता चारो और फैलने के कारण गाँव के सभी लोग वहाँ इकट्ठा हुए थे। कुछ अद्‌भुत घटना घटने वाली है इसी आशा से वे सभी ध्यान केंद्रिभूत करके उसके मृत शरीर की ओर ही देख रहे थे। यतिवर्य उसके मुख में भस्म डालकर सिद्धनाथजी की जयजयकार अभी कर ही रहे थे, इतने में रुक्मिणी ने धीरे से आँखें खोल दी, उस धनवान का मन हर्ष से फूले न समाया। उसने तुरंत उस साधु के चरण पकड़ लिए, इतने में रुकिणी उठकर बैठी। इस अद्‌भुत चमत्कार को देखकर चारो ओर आनंद फैल गया। एक ही क्षण में यतिवर्य अंतर्धान हो गए! ये सब देखकर सभी आश्चर्य से दंग होकर बोले, "स्वयं सिद्धारूढ़जी यतिवर्य के रूप में पधारे थे," तथा सभी ने मिलकर सिद्धनाथजी की मिलकर जयजयकार की। जब इतना सब कुछ हो रहा था तब रुक्मिणी की माता घर में नहीं थी, सारा वृत्तांत सुनकर वह दौड़ती हुई वहाँ पहुँची। वहाँ पहुँचते ही उसने रुक्मिणी को गले लगाकर मानो उसे अपने अश्रुओं से नहलाया। कुछ दिनों के पश्चात रुक्मिणी का शरीर तंदुरुस्त हुआ देखकर, वे सभी मिलकर, जिन्होंने उसे जीवन दान दिया था, उन सिद्धनाथजी के दर्शन के लिए हुबली निकल पड़े। सिद्धाश्रम में पधारकर सिद्धारूढ़जी से मिलते ही उन्होंने पूछा, "अब रुक्मिणी का स्वास्थ्य कैसा है?" सिद्धनाथजी के शब्द सुनकर वह धनवान आश्चर्य से दंग रह गया। उसने मन ही मन कहा की मैंने इन्हें कुछ भी न बताने के बावजूद भी ये सबकुछ कैसे जान गए? उसपर सतगुरुजी के चरणों पर भेंट वस्तुएँ अर्पण करके रुक्मिणी ने उनके चरण छुए, उसके पश्चात धनवान ने पहले से अंत तक सारी घटना का गुरुदेव को विवरण दिया। उसने कहा, "हे

सिद्धनाथजी, आप ही ने रुक्मिणी को बचाया तथा हम सभी को आप के भक्त बना दिया। हम सभी का उद्धार करने वाले आप ही हैं।" सभी ने मिलकर सिद्धजी के नाम की जयजयकार की और सतगुरुजी की आज्ञा लेकर अपने घर लौटे।

अब इस कहानी का लक्ष्यार्थ सुनिए। धनवान मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति की तीव्र मनोकामना होने वाला मुमुक्षु जीवात्मा समझें। सद्भक्ति उस जीवात्मा की रुक्मिणी के रूप में होने वाली कन्या समझें। सद्भक्ति को सांसारिक (घरसंसार) जीवन की भूत बाधा हो गयी। जब तक वैराग्य के साथ उसका विवाह नहीं होता, तब तक उसकी सांसारिक भूत बाधा नष्ट होने वाली नहीं थी। इसीलिए, भूत बाधा होते ही उसका विवाह करने के लिए वह चिल्लाती थी। उसके पश्चात शरणप्पा के रूप में आकर सतगुरुजी ने उससे नामस्मरण तथा सिद्धारूढ़जी की जीवनी का पठण करवाया, जिससे भूत बाधा नष्ट हो गयी। परंतु प्रारब्ध कर्म आड़े आने के कारण अचानक भक्ति की मृत्यु हुई दिखाई पड़ी; उसपर सतगुरुजी ने आकर फिर से उसे जीवन दान दिया। सिद्धारूढ़ स्वामीजी यही सतगुरुनाथ हैं, तथा ये सब उन्हीं का खेल हैं, भक्त का अंत:करण वे स्वयं निर्मल बनाते हैं, जिससे चारो ओर भक्त को वही भगवान के रूप में दिखाई पड़ते हैं। उनका हमेशा हृदय में चिंतन करने से, अंत:करण निर्मल हो जाता है, उसपर चारो ओर वही दिखाई पड़ते हैं। चारो ओर तथा सभी वस्तुओं में गुरुजी का रूप ही दिखाई पड़ता है। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह अडतालीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥